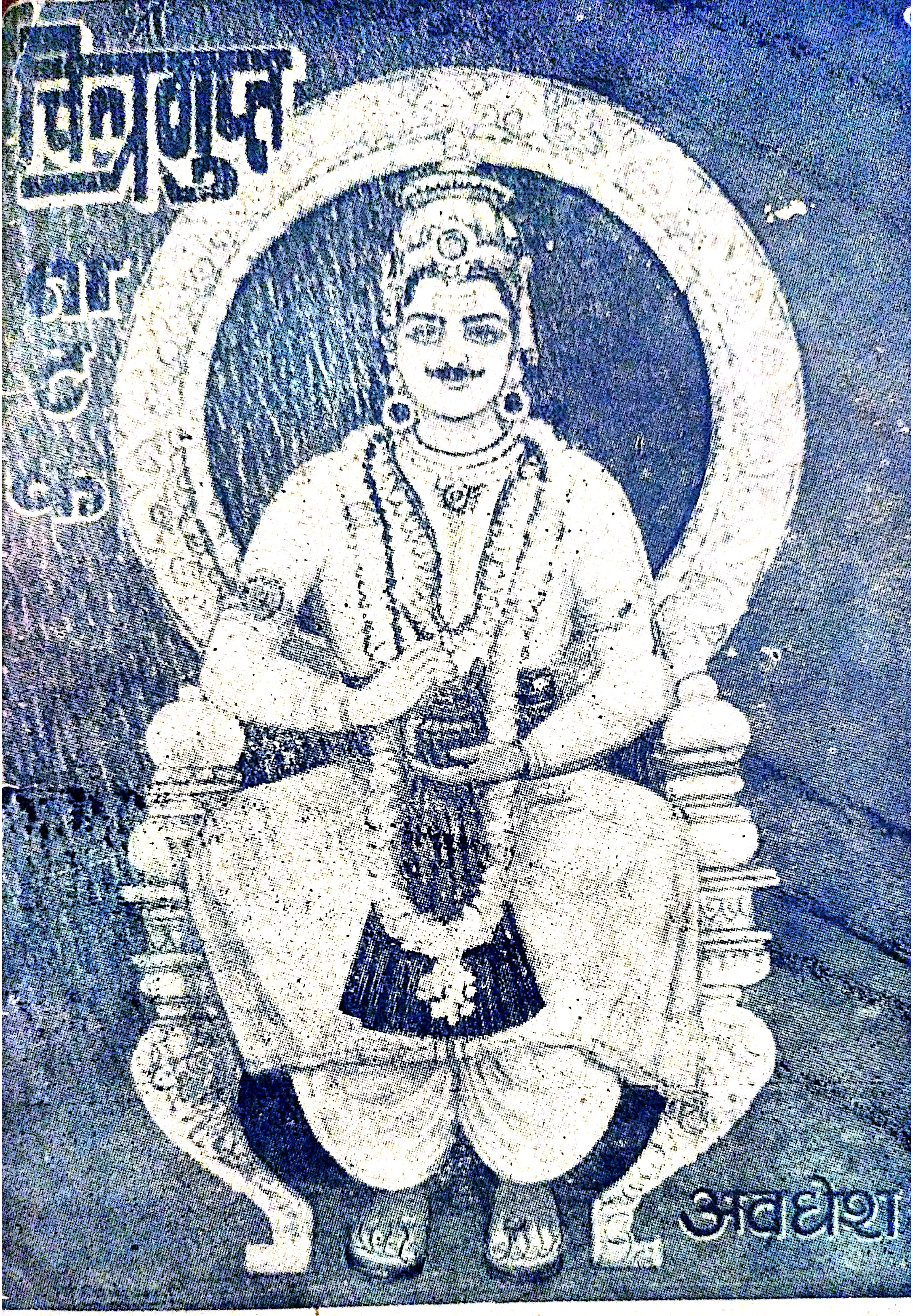
श्री चित्रगुप्त
अवधेश

ARUN
11/3/91

समर्पण

उस परमात्मा मातृशक्ति

को

जिसने कवि और

कविता

को

जन्म

दिया।

अंजलि प्रकाशन का पंचम पुष्प

श्री चित्रगुप्त (पौराणिक नाटक)

लेखक—अवधकिशोर श्रीवास्तव अवधेश
एम० ए० साहित्य रत्न आयुर्वेद रत्न

प्रकाशक— अंजलि प्रकाशन
श्री कुँवर श्रीवास्तव
३५०/२, नई बस्ती, झांसी

सर्वाधिकार— लेखक के आधीन सुरक्षित

मुख्य पृष्ठ—श्री शंकर वर्मा

मुद्रक—संगीता प्रिन्टर्स, झाँसी

मूल्य— ५ रु. मात्र

आशीर्वाद

कविवर श्रीअवधेशजी द्वारा रचित नाटक श्रीचित्रगुप्त समाज को जागृत करने का एक उत्तम प्रयास है, सम्पूर्ण मानव समाज इससे प्रेरणा लेकर अपना पथ प्रशस्त करेगा, इसका प्रचार प्रसार और अभिमंचन समाज को दिशा देगा ऐसा मेरा विश्वास है। श्रीअवधेशजी होनहार और प्रतिभावान कवि हैं उन पर माँ की अनुपम कृपा है. वे चिरायु होकर निरन्तर समाज की सेवा करते रहें यही मेरा आर्शीवाद है।

रामकृष्ण वर्मा, एडवोकेट, झाँसी

कविवर श्रीअवधेश जी द्वारा रचित श्रीचित्रगुप्त नाटक का अभिमंचन चित्रगुप्त मंदिर झांसीं में दि॰ २२-१०-७७ को होचुका है। पौराणिक नाटक होते हुये भी वर्तमान वतावरण में इस नाटक ने मन पर अमिट छाप छोड़ी है दर्शक गण दो घंटे मंत्रमुग्ध होकर नाटक देखते रहे सफलता का यही रहस्य था। मैं समाज द्वारा देश के कोने कोने में इस नाटक का पठन पाठन अभिमंचन एवं प्रचार प्रसार आवश्यक समझता हूँ। मुझे विश्वास है, लोग इसे आत्मसात कर प्रगति की ओर अग्रसर होंगे। श्री अवधेशजी हमारी समाज के गौरव हैं। मैं उनकी स्वस्थ चिरायु की कामना करता हूँ।

श्री गोपाल नारायन सिन्हा

अध्यक्ष कायस्थ सभा, झांसी

पात्र-परिचय

पुरुष पात्र

१- ब्रह्मा—आदि देव सृष्टि के रचयिता
२- नारद—ब्रह्मा के मानस पुत्र
३- धर्मराज—यमलोक के अधिठाता मृत्यु के देवता
४- रुद्रघोष—धर्मराज के पारषद
५- चित्रगुप्त-ब्रह्मा के चिन्तन पुत्र धर्मराज के सखा नाटक के नायक
६- प्रधान (जीव)—मृत्यु लोक का कल्पित व्यक्ति
७- दूत—यमलोक का दूत
८- रज्जब—एक काल्पनिक आत्मा
९- रजिया— " "
१०- मुन्शी—मवेशी खाने का मुन्शी
११- पारषद—धर्मराज के सभासद
१२- कालभद्र—धर्मराज के सहायक
१३- सूर्य—भगवान भास्कर
१४- मनु—आदिदेव मनु
१५- श्री चित्रगुप्त के बारह पुत्र

स्त्री पात्र

१- सरस्वती—मां वीणापाणि
२- इरावती—चित्रगुप्त की रानी
३- नन्दनी— " "
४- सुहासनी—सहेलियां
५- मृदु भाषी— "
६- चित्रगुप्त की १२ वधुयें
७- सुरनठी आदि